

Demographic Transition Theory

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत

1. परिचय

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत (Demographic Transition Theory) जनसंख्या अध्ययन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसके माध्यम से यह समझाया जाता है कि **आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ किसी समाज में जन्म-दर और मृत्यु-दर किस प्रकार बदलती हैं तथा इसका जनसंख्या वृद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।**

इस सिद्धांत के अनुसार कोई समाज सामान्यतः **उच्च जन्म-दर एवं उच्च मृत्यु-दर** की स्थिति से आगे बढ़कर **निम्न जन्म-दर एवं निम्न मृत्यु-दर** की स्थिति तक पहुँचता है।

इसे सरल रूप में इस प्रकार समझा जा सकता है—

उच्च जन्म-दर + उच्च मृत्यु-दर

↓

मृत्यु-दर में कमी

↓

तेज जनसंख्या वृद्धि

↓

जन्म-दर में कमी

↓

निम्न जन्म-दर + निम्न मृत्यु-दर

2. सिद्धांत की पृष्ठभूमि

जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवधारणा यूरोप में औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के दौरान जन्म-दर एवं मृत्यु-दर में हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों के अध्ययन से विकसित हुई।

इस दृष्टिकोण में जनसंख्या परिवर्तन को केवल जैविक प्रक्रिया नहीं माना जाता, बल्कि इसे—

- औद्योगीकरण
- नगरीकरण
- शिक्षा
- स्वास्थ्य सुविधाओं
- जीवन स्तर
- महिलाओं की स्थिति
- परिवार नियोजन

- सामाजिक आधुनिकीकरण

जैसे कारकों से जोड़ा जाता है।

3. जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्थाएँ

परंपरागत रूप से इस सिद्धांत को **तीन प्रमुख अवस्थाओं** में समझाया जाता है। आधुनिक व्याख्याओं में चौथी तथा कभी-कभी पाँचवीं अवस्था की भी चर्चा की जाती है।

अवस्था-1 : उच्च स्थिर अवस्था

High Stationary Stage

इस अवस्था में—

- जन्म-दर बहुत अधिक होती है।
- मृत्यु-दर भी बहुत अधिक होती है।
- जनसंख्या वृद्धि बहुत कम होती है।
- अकाल, महामारी और संक्रामक रोग सामान्य हो सकते हैं।
- स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित होती हैं।
- जीवन प्रत्याशा कम होती है।
- परिवार में बच्चों की संख्या अधिक होती है।

परिणाम

उच्च जन्म-दर को उच्च मृत्यु-दर लगभग संतुलित कर देती है। इसलिए कुल जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी रहती है।

उदाहरण: पूर्व-औद्योगिक समाज।

अवस्था-2 : प्रारंभिक विस्तार अवस्था

Early Expanding Stage

इस अवस्था में **मृत्यु-दर तेजी से घटती है**, लेकिन जन्म-दर अभी भी उँची रहती है।

मृत्यु-दर में कमी के कारण—

- चिकित्सा सुविधाओं में सुधार
- स्वच्छता
- स्वच्छ पेयजल
- बेहतर पोषण

- संक्रामक रोगों पर नियंत्रण

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लेकिन जन्म-दर तुरंत कम नहीं होती।

परिणाम

जन्म-दर उच्च + मृत्यु-दर निम्न → जनसंख्या वृद्धि तीव्र

इसे जनसांख्यिकीय संक्रमण की **सबसे तेज जनसंख्या वृद्धि वाली अवस्था** माना जाता है।

अवस्था-3 : उत्तरवर्ती विस्तार अवस्था

Late Expanding Stage

इस अवस्था में जन्म-दर में भी कमी आने लगती है।

इसके प्रमुख कारण हैं—

- शिक्षा का विस्तार
- नगरीकरण
- महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार
- विवाह की आयु में वृद्धि
- परिवार नियोजन
- बच्चों के पालन-पोषण की बढ़ती लागत
- छोटे परिवार की स्वीकार्यता
- जीवन स्तर में परिवर्तन

परिणाम

जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों निम्न स्तर की ओर बढ़ते हैं और **जनसंख्या वृद्धि की गति कम होने लगती है।**

अवस्था-4 : निम्न स्थिर अवस्था

Low Stationary Stage

इस अवस्था में—

- जन्म-दर निम्न होती है।
- मृत्यु-दर भी निम्न होती है।
- जनसंख्या वृद्धि बहुत कम या लगभग स्थिर होती है।

- जीवन प्रत्याशा अधिक होती है।
- छोटे परिवार का आदर्श मजबूत होता है।
- शिक्षा एवं नगरीकरण का स्तर उच्च होता है।

परिणाम: जनसंख्या अपेक्षाकृत स्थिर हो जाती है।

अवस्था-5 : जनसंख्या हास अवस्था

Declining Stage

कुछ आधुनिक व्याख्याओं में पाँचवीं अवस्था को शामिल किया जाता है।

इस अवस्था में—

जन्म-दर < मृत्यु-दर

हो सकती है।

इसके परिणामस्वरूप—

- कुल जनसंख्या में कमी आ सकती है।
- वृद्ध जनसंख्या का अनुपात बढ़ सकता है।
- कार्यशील जनसंख्या पर दबाव बढ़ सकता है।
- प्रवासन का महत्व बढ़ सकता है।

यह अवस्था विशेष रूप से कुछ अत्यधिक विकसित समाजों में देखी जाती है।

4. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल

इसे एक सरल तालिका से समझा जा सकता है—

अवस्था	जन्म-दर	मृत्यु-दर	जनसंख्या वृद्धि
I. उच्च स्थिर	उच्च	उच्च	बहुत कम
II. प्रारंभिक विस्तार	उच्च	तेजी से घटती	बहुत अधिक
III. उत्तरवर्ती विस्तार	घटती	निम्न	घटती हुई
IV. निम्न स्थिर	निम्न	निम्न	बहुत कम/स्थिर
V. हास	बहुत निम्न	निम्न	नकारात्मक हो सकती है

5. जनसांख्यिकीय संक्रमण को प्रभावित करने वाले कारक

1. आर्थिक विकास

आय एवं जीवन स्तर में वृद्धि से परिवार के आकार और प्रजनन व्यवहार में परिवर्तन हो सकता है।

2. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

चिकित्सा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार से मृत्यु-दर घटती है।

3. शिक्षा

शिक्षा, विशेषकर महिला शिक्षा, प्रजनन संबंधी निर्णयों को प्रभावित करती है।

4. नगरीकरण

शहरी जीवन में बच्चों की आर्थिक उपयोगिता कम और पालन-पोषण की लागत अधिक हो सकती है।

5. महिलाओं की स्थिति

महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि कम प्रजनन से जुड़ी हो सकती है।

6. परिवार नियोजन

गर्भनिरोधक साधनों और परिवार नियोजन की उपलब्धता जन्म-दर को प्रभावित करती है।

7. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन

परिवार, विवाह, संतान और लैंगिक भूमिकाओं के संबंध में बदलते विचार भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

6. सिद्धांत का महत्व

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत का उपयोग—

- जनसंख्या वृद्धि को समझने,
- जन्म-दर एवं मृत्यु-दर के परिवर्तन का अध्ययन करने,
- भविष्य की जनसंख्या का अनुमान लगाने,
- स्वास्थ्य एवं शिक्षा नीति बनाने,
- परिवार नियोजन कार्यक्रमों की योजना बनाने,
- वृद्धावस्था और कार्यशील जनसंख्या की समस्याओं को समझने

में किया जाता है।

7. सिद्धांत की प्रमुख आलोचनाएँ

1. सभी समाजों पर समान रूप से लागू नहीं

सभी देशों का जनसांख्यिकीय संक्रमण यूरोप के ऐतिहासिक अनुभव के समान नहीं है।

2. आर्थिक विकास को अधिक महत्व

यह सिद्धांत आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण को प्रमुख कारण मानता है, जबकि राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक भी महत्वपूर्ण हैं।

3. प्रवासन की उपेक्षा

मूल मॉडल में अंतरराष्ट्रीय एवं आंतरिक प्रवासन को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया।

4. संक्रमण का निश्चित क्रम नहीं

सभी समाज आवश्यक रूप से प्रत्येक अवस्था से एक ही क्रम और गति से गुजरें, यह आवश्यक नहीं है।

5. समकालीन परिस्थितियों की जटिलता

आधुनिक समाज में तकनीकी परिवर्तन, वैश्वीकरण, महिलाओं का रोजगार, प्रवासन और बदलती पारिवारिक संरचनाएँ जनसंख्या परिवर्तन को अधिक जटिल बनाती हैं।

8. निष्कर्ष

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत यह बताता है कि सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ जन्म-दर और मृत्यु-दर में क्रमिक परिवर्तन होता है। प्रारंभ में जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों उच्च होती हैं। विकास के साथ पहले मृत्यु-दर घटती है, जिससे जनसंख्या तेजी से बढ़ती है; बाद में जन्म-दर भी घटने लगती है और अंततः समाज निम्न जन्म-दर एवं निम्न मृत्यु-दर की स्थिति में पहुँच सकता है।

इसलिए यह सिद्धांत **जनसंख्या परिवर्तन और सामाजिक-आर्थिक विकास के बीच संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय एवं जनसांख्यिकीय ढाँचा** प्रदान करता है।